Deg-1
Hist. p-I

PAGE NO:
DATE: (1)

राजस्थान का चौथा विद्रोह एवं कुन्देलखण्ड की विजय :-

बार-बार पराजित होने के बावजूद राजपूत तुर्कों के एकाधिपत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार नही थे। मेद और चौहान राजपूतों ने एक संगठन की स्थापना कर तुर्क शासन को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया। संयुक्त मोर्चा के सैनिकों ने अजमेर को घेर लिया। अजमेर की रक्षा के लिए कुतुबुद्दीन ऐबक भी आ गया। किन्तु संयुक्त मोर्चा के सामने कुतुबुद्दीन ऐबक को पराजित होना पड़ा और उसने अजमेर के किले में शरण ली। संयोग से गजनी की सेना कुतुबुद्दीन की सहायता के लिए आ गई और राजपूतों को अजमेर का घेरा उठा लेना पड़ा।

अपमान का बदला लेने के उद्देश्य से कुतुबुद्दीन ऐबक ने गुजरात की राजधानी अन्हिलवाड़ा पर आक्रमण कर दिया। चालुक्यों ने आबू पर्वत के पास तुर्की सेना का मुकाबला किया। ऐबक कुशल सैन्य संचालन के कारण विजयी हुआ। कुतुबुद्दीन ने बदायूं बनारस, चन्दवारा और कन्नौज को पुनः अधिकार में ले लिया।

कुन्देलखण्ड की विजय :-

चन्देल वंश के शासकों का कुन्देलखण्ड में राज्य था। मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय कुन्देलखण्ड

P.T.O

Scanned with CamScanner

PAGE NO :
DATE :

का राजा परमर्दी देव था। परमर्दी देव के सहयोगी सरदारों ने तुर्कों के साथ वीरतापूर्वक युद्ध किया। कई महीनों की घेराबन्दी से तंग आकर परमर्दी देव ने मुहम्मद गोरी की अधीनता स्वीकार कर ली, किन्तु सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर करने के पहले परमर्दी देव की मृत्यु हो गयी। परमर्दी देव के मुख्यमंत्री अजय देव ने ऐबक के साथ युद्ध जारी रखा। ऐबक ने कालिंजर के किले के अन्दर पानी पहुँचने के रास्ते को अवरुद्ध कर दिया। कालिंजर की तरह महोबा और खजुराहो पर भी तुर्कों का अधिकार हो गया।